वह रात, जिसके बाद कोई वापस नहीं आया

बरसात की एक काली रात थी। आसमान में बादल ऐसे गरज रहे थे, मानो किसी अदृश्य युद्ध की आवाज़ धरती तक पहुँच रही हो। हवा इतनी ठंडी थी कि पेड़ों की शाखाएँ काँप रही थीं। दूर कहीं उल्लू की आवाज़ सुनाई देती, फिर अचानक सब कुछ शांत हो जाता।

उत्तर प्रदेश के एक छोटे-से गाँव रतनपुर के बाहर, घने जंगल के बीच एक पुरानी हवेली खड़ी थी। लोग उसे काली हवेली कहते थे।

गाँव के बुज़ुर्ग बताते थे कि लगभग सौ साल पहले उस हवेली में एक ज़मींदार अपने पूरे परिवार के साथ रहता था। एक रात हवेली से चीखें सुनाई दीं। सुबह जब लोग वहाँ पहुँचे, तो पूरा परिवार गायब था। न कोई लाश मिली, न खून का कोई निशान। बस हवेली की दीवारों पर काले हाथों के निशान बने हुए थे।

उस दिन के बाद जो भी रात में हवेली के अंदर गया, वह कभी वापस नहीं लौटा।

गाँव वालों ने वहाँ जाना छोड़ दिया। शाम ढलते ही लोग अपने घरों के दरवाज़े बंद कर लेते। बच्चों को डराने के लिए कहा जाता—"अगर शरारत की, तो काली हवेली वाली औरत तुम्हें ले जाएगी।"

लेकिन हर कहानी की तरह, इस कहानी में भी एक ऐसा इंसान था जिसे इन बातों पर विश्वास नहीं था।

उसका नाम था अर्जुन।

अर्जुन शहर का एक वीडियो बनाने वाला युवक था। उसे ऐसी जगहों पर जाकर सच्चाई पता करना पसंद था। जब उसने काली हवेली की कहानी सुनी, तो उसने तय किया कि वह वहाँ पूरी रात बिताकर दुनिया को सच दिखाएगा।

गाँव पहुँचते ही उसने चाय की दुकान पर पूछा, "काली हवेली का रास्ता किधर है?"

यह सुनते ही दुकान में बैठे सभी लोग चुप हो गए।

एक बूढ़ा आदमी धीरे से बोला, "बेटा... अगर ज़िंदगी प्यारी है, तो उस रास्ते पर मत जाना।"

अर्जुन मुस्कुराया, "भूत-वूत कुछ नहीं होते, बाबा।"

बूढ़े की आँखों में अचानक डर उतर आया।

वह फुसफुसाया, "भूत नहीं... उससे भी बुरा कुछ है।"

अर्जुन ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने अपना कैमरा उठाया और जंगल की ओर चल पड़ा।

शाम ढल चुकी थी।

जंगल में कदम रखते ही उसे महसूस हुआ कि हवा अचानक ठंडी हो गई है। कुछ दूर चलने के बाद उसे पहली बार हवेली दिखाई दी।

टूटी हुई दीवारें...

जंग लगा विशाल लोहे का फाटक...

और सबसे ऊपर टूटी हुई खिड़की में...

कोई सफेद साड़ी पहने खड़ा था।

अर्जुन ने कैमरा ज़ूम किया।

लेकिन जैसे ही तस्वीर साफ़ हुई...

वहाँ कोई नहीं था।

उसने सोचा कि शायद उसका भ्रम होगा।
वह फाटक के अंदर चला गया।
जैसे ही उसने पहला कदम हवेली के आँगन में रखा...
पीछे से धड़ाम!
लोहे का भारी फाटक अपने आप बंद हो गया।
अर्जुन भागकर फाटक तक पहुँचा। उसने पूरी ताकत से उसे धक्का दिया।
फाटक हिला तक नहीं।
तभी...
हवेली के अंदर से किसी छोटी बच्ची की हँसी सुनाई दी—
"तुम भी आ गए... अब तुम कभी वापस नहीं जाओगे..."
अर्जुन के हाथ से कैमरा छूटकर ज़मीन पर गिर गया।
और कैमरे की स्क्रीन पर एक चेहरा दिखाई दिया...
वही सफेद साड़ी वाली औरत...
जो अब अर्जुन के ठीक पीछे खड़ी थी।
अर्जुन का दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था कि उसे अपनी ही साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
उसने धीरे-धीरे पीछे मुड़ने की हिम्मत की...
लेकिन वहाँ कोई नहीं था।
सिर्फ़ टूटी हुई दीवारें, बिखरे हुए पत्थर और हवा में उड़ती धूल।
उसने राहत की साँस ली और कैमरा उठाया। कैमरे की स्क्रीन पर रिकॉर्डिंग अब भी चल रही थी।
अर्जुन ने रिकॉर्डिंग वापस चलाई।
वीडियो में साफ़ दिखाई दे रहा था कि उसके पीछे एक औरत खड़ी थी। उसके लंबे काले बाल चेहरे पर बिखरे थे। सफेद साड़ी मिट्टी और काले धब्बों से भरी हुई थी। लेकिन सबसे डरावनी बात यह थी कि उसके पैर उल्टी दिशा में मुड़े हुए थे।
अर्जुन ने तुरंत पीछे देखा।
फिर भी वहाँ कोई नहीं था।
उसके हाथ काँपने लगे।
"यह कैमरे की कोई गड़बड़ी होगी..." उसने खुद को समझाया।
तभी हवेली के अंदर से किसी के धीरे-धीरे चलने की आवाज़ आई।
ठक... ठक... ठक...
हर कदम पहले से ज़्यादा साफ़ सुनाई दे रहा था।
अर्जुन ने टॉर्च जलाई और आवाज़ की दिशा में बढ़ गया।
अंदर का बड़ा हॉल धूल और मकड़ी के जालों से भरा हुआ था। दीवारों पर पुराने चित्र टंगे थे, लेकिन सभी चेहरों को किसी ने नुकीली चीज़ से खरोंच दिया था।

एक कोने में पुरानी घड़ी टंगी थी।

उसकी सूइयाँ रात के 2:17 पर अटकी हुई थीं।

अचानक...

घड़ी अपने आप चलने लगी।

टन... टन... टन...

बारह बार घंटी बजी।

लेकिन समय तो सिर्फ़ नौ बजे का था।

घंटी रुकते ही पूरा हॉल फिर से शांत हो गया।

तभी ऊपर की मंज़िल से किसी बच्ची के गुनगुनाने की आवाज़ आई।

वह आवाज़ मीठी थी...

लेकिन उसमें कुछ ऐसा था जिससे शरीर में सिहरन दौड़ गई।

अर्जुन सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

हर सीढ़ी उसके वजन से कराह रही थी।

ऊपर पहुँचते ही उसे एक लंबा गलियारा दिखाई दिया। गलियारे के अंत में एक लकड़ी का दरवाज़ा आधा खुला था।

अंदर से धीमी रोशनी आ रही थी।

अर्जुन ने काँपते हाथों से दरवाज़ा खोला।

कमरे में एक पुराना झूला अपने आप हिल रहा था।

झूले पर कोई नहीं था।

लेकिन...

झूले के नीचे मिट्टी पर छोटे-छोटे गीले पैरों के निशान बने हुए थे।

वे निशान धीरे-धीरे उसकी तरफ़ आने लगे...

जैसे कोई अदृश्य बच्चा उसकी ओर चल रहा हो।

अर्जुन पीछे हट गया।

तभी उसके कान के बिल्कुल पास किसी ने फुसफुसाकर कहा—

"तुम बहुत देर से आए..."

वह चीखते हुए पलटा...

लेकिन वहाँ फिर कोई नहीं था।

उसी क्षण कमरे का दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया।

टॉर्च बुझ गई।

कमरा पूरी तरह अँधेरे में डूब गया।

अर्जुन ने जेब से मोबाइल निकाला।

मोबाइल की हल्की रोशनी में उसने देखा...

दीवार पर लाल रंग से लिखा था—

"यहाँ आने वाला कभी अकेला नहीं लौटता।"

और तभी...

झूला अचानक तेज़ी से हिलने लगा।

चीं... चीं... चीं...

कमरे में किसी बच्ची की हँसी गूँज उठी।

अर्जुन ने रोशनी झूले की ओर की...

इस बार झूला खाली नहीं था।

उस पर लगभग आठ साल की एक लड़की बैठी थी।

उसका चेहरा झुका हुआ था।

धीरे-धीरे उसने अपना सिर उठाया...

उसकी आँखों की जगह केवल काला अँधेरा था।

और उसके होंठों से एक ही वाक्य निकला—

"माँ आ गई..."

उसी पल कमरे के बाहर भारी कदमों की आवाज़ गूँजी।

धम... धम... धम...

कोई... या कुछ... दरवाज़े के बाहर खड़ा था।

दरवाज़े के बाहर भारी कदमों की आवाज़ लगातार करीब आती जा रही थी।

धम... धम... धम...

हर कदम के साथ पूरा कमरा काँप रहा था।

अर्जुन की साँसें तेज़ हो गईं। उसने धीरे-धीरे झूले की ओर देखा।

वह छोटी लड़की अब भी वहीं बैठी थी।

लेकिन इस बार उसके होंठों पर एक अजीब मुस्कान थी।

वह धीरे से बोली—

"अगर दरवाज़ा खुल गया... तो माँ तुम्हें पहचान लेगी।"

अर्जुन ने काँपती आवाज़ में पूछा, "तुम... कौन हो?"

लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने अपनी छोटी उँगली कमरे के कोने की ओर उठा दी।

वहाँ दीवार में एक पुरानी लकड़ी की अलमारी लगी थी।

अर्जुन तुरंत उसकी ओर भागा।

अलमारी खोलते ही उसे पीछे एक संकरा गुप्त रास्ता दिखाई दिया।

उसी समय...

धड़ाम!

कमरे का दरवाज़ा टूटकर अंदर गिर गया।

अर्जुन ने बिना पीछे देखे उस गुप्त रास्ते में छलांग लगा दी।

जैसे ही वह अंदर पहुँचा, पीछे का लकड़ी का पैनल अपने आप बंद हो गया।

अब चारों ओर घना अँधेरा था।

दीवारों से सीलन की बदबू आ रही थी।

वह मोबाइल की रोशनी में धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

कुछ दूर चलने के बाद उसे दीवारों पर अजीब चित्र दिखाई दिए।

उनमें एक ही औरत बार-बार बनी हुई थी।

सफेद साड़ी...

लंबे बाल...

और लाल आँखें।

लेकिन आख़िरी चित्र देखकर अर्जुन के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

उस चित्र में वही औरत...

अर्जुन का हाथ पकड़े खड़ी थी।

और नीचे लिखा था—

"अगला मेहमान।"

अर्जुन ने घबराकर पीछे कदम रखा।

तभी उसके मोबाइल की स्क्रीन अपने आप जल उठी।

उस पर कोई वीडियो चल रहा था।

वीडियो उसी रात का था।

लेकिन उसमें अर्जुन नहीं...

बल्कि कोई और युवक दिखाई दे रहा था।

वह भी इसी सुरंग में भाग रहा था।

कुछ सेकंड बाद पीछे से एक काला साया आया...

और उसे अँधेरे में घसीट ले गया।

वीडियो यहीं खत्म हो गया।

अर्जुन के हाथ काँपने लगे।

अचानक उसे एहसास हुआ...

वीडियो अभी रिकॉर्ड नहीं था।

यह तो कई साल पुराना लग रहा था।

लेकिन...

उस वीडियो के आखिर में एक पल के लिए कैमरा मुड़ा था।

और वहाँ...

अर्जुन खुद खड़ा दिखाई दे रहा था।

"यह कैसे हो सकता है...?" वह बुदबुदाया।

उसी समय सुरंग में ठंडी हवा का तेज़ झोंका चला।

उसके साथ एक धीमी आवाज़ गूँजी—

"भागने का रास्ता ऊपर है..."

सुरंग खत्म होते ही अर्जुन एक गोल कमरे में पहुँचा।

कमरे के बीचों-बीच लोहे की घुमावदार सीढ़ियाँ थीं, जो हवेली की तीसरी मंज़िल तक जाती थीं।

गाँव वालों की बात उसे याद आई—

"काली हवेली की तीसरी मंज़िल पर आज तक कोई ज़िंदा नहीं गया..."

लेकिन नीचे लौटने का रास्ता बंद हो चुका था।

मजबूर होकर वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

हर सीढ़ी के साथ हवा और ठंडी होती गई।

ऊपर पहुँचते ही उसने देखा...

पूरी मंज़िल पर दर्जनों पुराने आईने लगे हुए थे।

अर्जुन ने एक आईने में खुद को देखा...

लेकिन उसका प्रतिबिंब मुस्कुरा रहा था।

जबकि अर्जुन का चेहरा डर से सफेद पड़ चुका था।

वह पीछे हट गया।

तभी...

सारे आईनों में एक साथ वही सफेद साड़ी वाली औरत दिखाई दी।

लेकिन असली कमरे में...

वह कहीं नहीं थी।

फिर सभी आईनों से एक साथ आवाज़ आई—

"अब तुम बाहर नहीं जाओगे..."

और अचानक...

सभी आईने एक-एक करके टूटने लगे।

छन्न...! छन्न...! छन्न...!

आख़िरी आईना टूटते ही उसके पीछे एक पुराना लकड़ी का दरवाज़ा दिखाई दिया...

जिस पर खून से लिखा था—

"इसे खोलोगे... तो श्राप हमेशा के लिए जाग जाएगा।"

अर्जुन ने काँपते हाथ से दरवाज़े की कुंडी पकड़ ली...

और तभी...

दरवाज़े के दूसरी तरफ़ से किसी ने धीरे-धीरे तीन बार दस्तक दी।

ठक... ठक... ठक...**ठक... ठक... ठक...**

दरवाज़े के दूसरी तरफ़ से आई दस्तक पूरे कमरे में गूँज उठी।

अर्जुन का गला सूख गया। उसके हाथ काँप रहे थे, लेकिन जिज्ञासा डर से बड़ी थी।

उसने धीरे-धीरे कुंडी घुमाई।

चर्रर्रर...

दरवाज़ा अपने आप खुल गया।

अंदर का कमरा बाकी हवेली से बिल्कुल अलग था।

न धूल...न मकड़ी के जाले...

सब कुछ ऐसा लग रहा था, जैसे अभी-अभी किसी ने उसे साफ़ किया हो।

कमरे के बीचों-बीच एक पुरानी लकड़ी की मेज़ रखी थी। उस पर एक मोटी डायरी, एक बुझा हुआ लालटेन और चाँदी का छोटा-सा ताबीज़ रखा था।

अर्जुन ने डायरी उठाई।

पहले पन्ने पर लिखा था—

"अगर तुम यह पढ़ रहे हो... तो समझ लो कि हवेली ने तुम्हें अपना अगला कैदी चुन लिया है। मेरा नाम राघव है। मैं भी सच की तलाश में यहाँ आया था... लेकिन अब शायद कभी बाहर नहीं जा पाऊँ।"

अर्जुन के हाथ काँपने लगे।

उसने अगला पन्ना पलटा।

उसमें लिखा था—

"इस हवेली में रहने वाली औरत का नाम 'मालती' था। लोग उसे डायन कहते थे, लेकिन सच उससे भी ज़्यादा भयानक है। उसके पति ने लालच में पूरे परिवार की हत्या कर दी और दोष उसी पर डाल दिया। मरते समय मालती ने शाप दिया—'जो भी इस हवेली में लालच या जिज्ञासा लेकर आएगा, उसकी आत्मा यहीं कैद हो जाएगी।'"

अचानक...

कमरे का लालटेन अपने आप जल उठा।

पीली लौ काँप रही थी।

दीवार पर दो परछाइयाँ दिखाई दीं।

एक अर्जुन की...

और दूसरी किसी लंबे इंसान की...

जो उसके ठीक पीछे खड़ा था।

अर्जुन ने तुरंत पीछे देखा।

कमरा खाली था।

लेकिन दीवार पर दूसरी परछाईं अब भी मौजूद थी।

धीरे-धीरे वह परछाईं अर्जुन की परछाईं के और करीब आने लगी।

उसी समय डायरी का आख़िरी पन्ना अपने आप खुल गया।

उस पर लाल स्याही से लिखा था—

"पीछे मत देखना..."

लेकिन अर्जुन पहले ही पीछे देख चुका था।

कमरे का तापमान अचानक बर्फ जैसा ठंडा हो गया।

किसी ने उसके कंधे पर बर्फ जैसे ठंडे हाथ रख दिए।

उसकी साँस रुकने लगी।

डर के मारे उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

तभी उसे एक महिला की धीमी आवाज़ सुनाई दी—

"मैं राक्षस नहीं हूँ... असली राक्षस अभी ज़िंदा है..."

अर्जुन ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं।

उके सामने वही सफेद साड़ी वाली औरत खड़ी थी।

लेकिन इस बार उसके चेहरे पर गुस्सा नहीं...

बल्कि गहरा दुख था।

उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

वह काँपती आवाज़ में बोली—

"अगर इस हवेली को मुक्त करना है... तो तहखाने में रखा काला संदूक ढूँढो। उसमें मेरे श्राप का रहस्य बंद है। लेकिन सावधान... वहाँ 'वह' तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।"

इतना कहकर वह धुएँ की तरह गायब हो गई।

अगले ही पल...

पूरी हवेली ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगी।

फर्श में लंबी दरार पड़ गई।

दरार के नीचे गहरा अँधेरा था...

और उसी अँधेरे से दो चमकती हुई लाल आँखें अर्जुन को घूर रही थीं।

फिर एक भारी, डरावनी आवाज़ गूँजी—

"आख़िर... कोई मेरे पास भी पहुँच ही गया

हवेली की तीसरी मंज़िल काँप रही थी।

फर्श की दरार धीरे-धीरे चौड़ी होती जा रही थी।

उस गहरे अँधेरे में दो लाल आँखें लगातार अर्जुन को घूर रही थीं।

फिर वही भारी आवाज़ गूँजी—

"सौ साल बाद... कोई मेरी नींद तोड़ने आया है।"

अर्जुन का पूरा शरीर डर से काँप उठा।

अचानक फर्श टूट गया।

वह चीखते हुए नीचे गिरने लगा।

कुछ सेकंड बाद...

धड़ाम!

वह सूखी मिट्टी पर आ गिरा।

उसने किसी तरह खुद को संभाला और मोबाइल की टॉर्च जलाई।

वह हवेली के तहखाने में था।

चारों तरफ़ काली दीवारें थीं। हवा में सड़ांध और धुएँ की गंध फैली हुई थी।

दीवारों पर लोहे की मोटी जंजीरें लटक रही थीं।

कुछ जंजीरों में इंसानों के पुराने कंकाल अब भी बँधे हुए थे।

अर्जुन का गला सूख गया।

तभी उसे किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

एक कोने में लगभग दस साल का एक लड़का बैठा था।

उसने सिर उठाकर अर्जुन की ओर देखा।

उसकी आँखों में डर था।

"भैया... मुझे यहाँ से बाहर ले चलो..." उसने काँपती आवाज़ में कहा।

अर्जुन उसके पास पहुँचा और उसका हाथ पकड़ लिया।

लेकिन जैसे ही उसने लड़के को उठाया...

उसका चेहरा बदलने लगा।

मासूम आँखें लाल हो गईं।

मुँह कानों तक फट गया।

और उसके दाँत लंबे, नुकीले हो गए।

वह ज़ोर से हँसा—

"एक और शिकार!"

अर्जुन ने उसे धक्का दिया और भागने लगा।

पीछे से वह डरावनी हँसी पूरे तहखाने में गूँज रही थी।

भागते-भागते अर्जुन एक विशाल लोहे के दरवाज़े तक पहुँचा।

दरवाज़े पर मोटे अक्षरों में लिखा था—

"जिसने इसे खोला... उसने मौत को बुलाया।"

उसी समय उसकी जेब में रखा चाँदी का ताबीज़ तेज़ी से गर्म होने लगा।

ताबीज़ से हल्की सफेद रोशनी निकली।

और दरवाज़ा अपने आप खुल गया।

अंदर एक छोटा-सा कमरा था।

कमरे के बीचों-बीच काले पत्थर का एक संदूक रखा था।

यही वह संदूक था, जिसके बारे में मालती ने बताया था।

अर्जुन धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा।

जैसे ही उसने संदूक का ढक्कन खोला...

पूरा तहखाना ज़ोर से हिलने लगा।

संदूक के अंदर एक पुराना आईना रखा था।

आईने में अर्जुन का चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था।

उसकी जगह...

वही सफेद साड़ी वाली मालती दिखाई दे रही थी।

उसने घबराकर कहा—

"देर हो गई... वह जाग चुका है!"

अचानक...

आईना चटक गया।

छन्न...!

उसी क्षण तहखाने की सारी मोमबत्तियाँ अपने आप जल उठीं।

रोशनी में अर्जुन ने देखा...

वह अकेला नहीं था।

सैकड़ों काले साये उसे चारों ओर से घेर चुके थे।

और उन सबके बीच...

लगभग आठ फ़ुट लंबा, काले चोगे में लिपटा एक भयानक आदमी खड़ा था।

उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था।

लेकिन उसकी दो लाल आँखें आग की तरह चमक रही थीं।तहखाने में ऐसा सन्नाटा छा गया कि अर्जुन को अपनी धड़कनें साफ़ सुनाई देने लगीं।

काले चोगे में लिपटा वह विशाल आदमी धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था।

हर कदम के साथ ज़मीन काँप रही थी।

ठक... ठक... ठक...

अर्जुन पीछे हटने लगा, लेकिन उसके पैर किसी चीज़ से टकरा गए। उसने नीचे देखा।

वहाँ एक पुरानी तलवार पड़ी थी, जिस पर जंग लग चुकी थी।

उसने तलवार उठा ली।

रहस्यमयी आदमी हँसा।

उसकी हँसी इंसान जैसी नहीं थी।

ऐसा लग रहा था जैसे एक साथ सैकड़ों लोग हँस रहे हों।

वह बोला—

"लोहे की यह तलवार मुझे नहीं रोक सकती, अर्जुन।"

अर्जुन चौंक गया।

"तुम... मेरा नाम कैसे जानते हो?"

वह कुछ पल चुप रहा, फिर बोला—

"जो इस हवेली में कदम रखता है, उसका नाम, उसका अतीत और उसका अंत... सब मुझे पहले से पता होता है।"अचानक उसके चोगे से काला धुआँ निकलने लग धुआँ पूरे तहखाने में फैल गया।

अर्जुन को कुछ दिखाई देना बंद हो गया।

उसी धुएँ के बीच उसे अपनी माँ की आवाज़ सुनाई दी—

"अर्जुन... बेटा... मेरी मदद करो..."

वह आवाज़ बिल्कुल असली लग रही थी।अर्जुन उस दिशा में दौड़ा।लेकिन अचानक उसके गले में पहना चाँदी का ताबीज़ तेज़ चमक उठा।उसे मालती की आवाज़ सुनाई दी—

"रुको! यह तुम्हारी माँ नहीं... इसका छलावा है!"अर्जुन वहीं रुक गया।अगले ही पल धुआँ हट गया।

जहाँ उसकी माँ दिखाई दे रही थीं, वहाँ अब एकभयानक काला साया खड़ा था।उसका मुँह पूरा खुला हुआ था।

अगर अर्जुन एक कदम और बढ़ता...तो वह उसके भीतर समा जाता।अर्जुन ने काँपते हुए ताबीज़ को कसकर पकड़ लिया।तभी ताबीज़ से निकली सफेद रोशनी पूरे तहखाने में फैल गई।काले साये दर्द से चीखने लगे।

रहस्यमयी आदमी पहली बार गुस्से में चिल्लाया—

"मालती की शक्ति अभी भी ज़िंदा है!"

उसी समय तहखाने की दीवार का एक हिस्सा टूट गयापीछे एक गुप्त कमरा दिखाई दिया।उस कमरे में एकपत्थर की वेदी थी।वेदी पर एक पुरानी तस्वीर रखी थी।अर्जुन ने तस्वीर उठाई।तस्वीर में एक परिवार खड़ा था—

ज़मींदार...उसकी पत्नी मालती...और उनकी छोटी बेटी।

लेकिन तस्वीर के कोने में एक और आदमी खड़ा था।

काले कपड़ों में...लाल आँखों वाला...

बिल्कुल वही, जो इस समय उसके सामने खड़ा था।

तस्वीर के पीछे एक वाक्य लिखा था—

"बुराई बाहर से नहीं आई थी... वह इसी घर में रहतीथी।"

अर्जुन ने तस्वीर की ओर देखा, फिर उस रहस्यमयीआदमी की ओर।

वह आदमी मुस्कुराया और धीरे-धीरे अपना काला चोगा हटाने लगा।जैसे ही उसका चेहरा दिखाई दिया...

अर्जुन की चीख निकल गई।क्योंकि वह चेहरा...इंसान का नहीं था।और सबसे भयानक बात...

उसका चेहरा बिल्कुल अर्जुन जैसा था।उसने मुस्कुराकर कहा"मैं तुम्हारा अंत नहीं हूँ... मैं तुम्हारा दूसरा रूप हूँ।"

तहखाने की सारी मोमबत्तियाँ एक साथ बुझ गईं।

चारों ओर फिर से घना अँधेरा छा गया।

वह धीरे-धीरे अर्जुन की ओर बढ़ा...

और गूँजती हुई आवाज़ में बोला—

"मैं हूँ... इस हवेली का असली मालिक।"

अर्जुन के हाथ से ताबीज़ छूटकर ज़मीन पर गिर गया...

और उसी पल...

वह रहस्यमयी आदमी मुस्कुराया।

तहखाने में ऐसा सन्नाटा छा गया कि अर्जुन को अपनी धड़कनें साफ़ सुनाई देने लगीं।

काले चोगे में लिपटा वह विशाल आदमी धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था।

हर कदम के साथ ज़मीन काँप रही थी।

ठक... ठक... ठक...

अर्जुन पीछे हटने लगा, लेकिन उसके पैर किसी चीज़ से टकरा गए। उसने नीचे देखा।

वहाँ एक पुरानी तलवार पड़ी थी, जिस पर जंग लग चुकी थी।

उसने तलवार उठा ली।

रहस्यमयी आदमी हँसा।

उसकी हँसी इंसान जैसी नहीं थी।

ऐसा लग रहा था जैसे एक साथ सैकड़ों लोग हँस रहे हों।

वह बोला—

"लोहे की यह तलवार मुझे नहीं रोक सकती, अर्जुन।"

अर्जुन चौंक गया।

"तुम... मेरा नाम कैसे जानते हो?"

वह कुछ पल चुप रहा, फिर बोला—

"जो इस हवेली में कदम रखता है, उसका नाम, उसका अतीत और उसका अंत... सब मुझे पहले से पता होता है।"

अचानक उसके चोगे से काला धुआँ निकलने लगा।

धुआँ पूरे तहखाने में फैल गया।

अर्जुन को कुछ दिखाई देना बंद हो गया।

उसी धुएँ के बीच उसे अपनी माँ की आवाज़ सुनाई दी—

"अर्जुन... बेटा... मेरी मदद करो..."

वह आवाज़ बिल्कुल असली लग रही थी।

अर्जुन उस दिशा में दौड़ा।

लेकिन अचानक उसके गले में पहना चाँदी का ताबीज़ तेज़ चमक उठा।

उसे मालती की आवाज़ सुनाई दी—

"रुको! यह तुम्हारी माँ नहीं... इसका छलावा है!"

अर्जुन वहीं रुक गया।

अगले ही पल धुआँ हट गया।

जहाँ उसकी माँ दिखाई दे रही थीं, वहाँ अब एक भयानक काला साया खड़ा था।

उसका मुँह पूरा खुला हुआ था।

अगर अर्जुन एक कदम और बढ़ता...

तो वह उसके भीतर समा जाता।

अर्जुन ने काँपते हुए ताबीज़ को कसकर पकड़ लिया।

तभी ताबीज़ से निकली सफेद रोशनी पूरे तहखाने में फैल गई।

काले साये दर्द से चीखने लगे।

रहस्यमयी आदमी पहली बार गुस्से में चिल्लाया—

"मालती की शक्ति अभी भी ज़िंदा है!"

उसी समय तहखाने की दीवार का एक हिस्सा टूट गया।

पीछे एक गुप्त कमरा दिखाई दिया।

उस कमरे में एक पत्थर की वेदी थी।

वेदी पर एक पुरानी तस्वीर रखी थी।

अर्जुन ने तस्वीर उठाई।

तस्वीर में एक परिवार खड़ा था—

ज़मींदार...

उसकी पत्नी मालती...

और उनकी छोटी बेटी।

लेकिन तस्वीर के कोने में एक और आदमी खड़ा था।

काले कपड़ों में...

लाल आँखों वाला...बिल्कुल वही, जो इस समय उसके सामने खड़ा था।

तस्वीर के पीछे एक वाक्य लिखा था—"बुराई बाहर से नहीं आई थी... वह इसी घर में रहतीथी।"

अर्जुन ने तस्वीर की ओर देखा, फिर उस रहस्यमयी आदमी की ओर।वह आदमी मुस्कुराया और धीरे-धीरे अपना काला चोगा हटाने लगा।जैसे ही उसका चेहरा दिखाई दिया...अर्जुन की चीख निकल गई।क्योंकि वह चेहरा...इंसान का नहीं था।और सबसे भयानक बात... उसका चेहरा बिल्कुल अर्जुन जैसा था।

उसने मुस्कुराकर कहा—"मैं तुम्हारा अंत नहीं हूँ... मैं तुम्हारा दूसरा रूप हूँ।"तहखाने की सारी मोमबत्तियाँ एक साथ बुझ गईं।चारों ओर फिर से घना अँधेरा छा गया।

तहखाने में घना अँधेरा छा गया।

अर्जुन का गला सूख गया।

अभी कुछ पल पहले जो चेहरा उसने देखा था... वह बिल्कुल उसी जैसा था।

वही आँखें।

वही चेहरा।

वही आवाज़।

फर्क सिर्फ इतना था कि उस दूसरे अर्जुन की आँखें खून की तरह लाल थीं।

वह मुस्कुराया।

"डर गए?"

अर्जुन ने काँपती आवाज़ में पूछा, "तुम... कौन हो?"
उसने जवाब दिया—
"मैं तुम्हारा दूसरा चेहरा नहीं हूँ... मैं हर उस इंसान का अँधेरा हूँ जो इस हवेली में प्रवेश करता है। मैं उसके डर, लालच और गुस्से से जन्म लेता हूँ।"
अचानक पूरे तहखाने में सैकड़ों आईने उभर आए।
हर आईने में अर्जुन का अलग-अलग रूप दिखाई दे रहा था।
किसी में वह रो रहा था।
किसी में वह बूढ़ा हो चुका था।
और एक आईने में...
वह ज़मीन पर मरा हुआ पड़ा था।
अर्जुन ने घबराकर नज़रें फेर लीं।
तभी मालती की आवाज़ फिर सुनाई दी—
"अर्जुन! असली दुश्मन आईनों में नहीं... उनके बीच छिपा है!"
अर्जुन ने ध्यान से चारों ओर देखा।
सभी आईनों में उसका प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था...
लेकिन एक आईना ऐसा था जिसमें कोई प्रतिबिंब नहीं था।
वह खाली था।
अर्जुन धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा।
जैसे ही उसने हाथ लगाया...
पूरा आईना काले पानी की तरह लहराने लगा।
अचानक उसमें से एक बर्फ जैसा ठंडा हाथ बाहर निकला और अर्जुन की कलाई पकड़ ली।
वह पूरी ताकत से उसे अंदर खींचने लगा।
अर्जुन चीखा और ताबीज़ कसकर पकड़ लिया।
ताबीज़ से तेज़ सफेद प्रकाश निकला।
धाऽऽऽड़!
आईना हज़ारों टुकड़ों में टूट गया।
एक भयानक चीख पूरे तहखाने में गूँज उठी।
बाकी सारे आईने भी अपने आप चटकने लगे।
लाल आँखों वाला दूसरा अर्जुन दर्द से तड़प उठा।
वह गुर्राया—
"तुम्हें लगता है तुम जीत जाओगे?"
"नहीं..."
"अब तुम्हें उस जगह जाना होगा जहाँ से आज तक कोई जीवित वापस नहीं आया।"

अचानक ज़मीन फिर से काँपने लगी।

तहखाने की पिछली दीवार धीरे-धीरे खुली।

उसके पीछे पत्थर की सीढ़ियाँ नीचे की ओर जा रही थीं।

नीचे से ठंडी हवा और धीमी-धीमी मंत्रोच्चार जैसी आवाज़ें आ रही थीं।

मालती की आवाज़ एक बार फिर गूँजी—

"वहीं हवेली का सबसे बड़ा रहस्य छिपा है... लेकिन सावधान, वहाँ सच और भ्रम में अंतर करना लगभग असंभव है।"

अर्जुन ने गहरी साँस ली।

उसने टॉर्च उठाई...

और अँधेरी सीढ़ियों की ओर कदम बढ़ा दिया।

जैसे ही वह पहली सीढ़ी पर पहुँचा...

नीचे से किसी बच्चे की आवाज़ आई—

"पापा... आपने मुझे इतनी देर से क्यों आने दिया?"

अर्जुन ठिठक गया।

उसकी कभी शादी भी नहीं हुई थी।

फिर यह आवाज़ किसकी थी?

उसी क्षण...

अँधेरे में दो छोटी-छोटी लाल आँखें चमक उठीं।

अर्जुन सीढ़ियों पर खड़ा रह गया।

अँधेरे में दो छोटी लाल आँखें उसे घूर रही थीं।

फिर वही मासूम आवाज़ आई—

"पापा... मुझे अकेला छोड़कर मत जाइए..."

अर्जुन का दिल ज़ोर से धड़कने लगा

"कौन हो तुम?" उसने काँपती आवाज़ में पूछा।

कोई जवाब नहीं मिला।

सिर्फ़ सन्नाटा...

और फिर...

धीरे-धीरे उन लाल आँखों के आसपास एक छोटे बच्चे का चेहरा दिखाई देने लगा।

वह लगभग सात-आठ साल का था।

उसके कपड़े फटे हुए थे और चेहरा धूल से भरा था।

वह रो रहा था।

"मेरी मदद कीजिए..."

अर्जुन को मालती की चेतावनी याद थी—**"यहाँ सच और भ्रम में अंतर करना लगभग असंभव है।"**

वह सावधानी से आगे बढ़ा।

अचानक उसके हाथ का ताबीज़ गर्म हो गया।

बार वह चमका नहीं।

बल्कि हल्की-सी धड़कन देने लगा।

अर्जुन समझ गया...

यह बच्चा कोई बुरी आत्मा नहीं है।

वह उसके पास गया।

बच्चे ने काँपते हुए कहा—

"मेरा नाम **मोहन** है... मैं इस हवेली का नहीं हूँ। मुझे बहुत साल पहले यहाँ कैद कर दिया गया था।"

"किसने?"

बच्चे ने डरते हुए अँधेरे की ओर इशारा किया।

"कपालिक ने..."

इतना सुनते ही तहखाने की दीवारें हिलने लगीं।

हवा में राख उड़ने लगी।

और अचानक...

पूरे रास्ते में दर्जनों मशालें अपने आप जल उठीं।

उनकी रोशनी में अर्जुन ने पहली बार वह जगह साफ़ देखी।

यह कोई साधारण तहखाना नहीं था।

यह एक बहुत प्राचीन भूमिगत मंदिर था।

पत्थर के विशाल खंभों पर डरावनी आकृतियाँ उकेरी गई थीं।

बीच में काले पत्थर की एक विशाल मूर्ति खड़ी थी।

उसकी आँखों में लाल मणियाँ जड़ी थीं, जो अँधेरे में चमक रही थीं।

मूर्ति के सामने सूखे खून के निशान थे।

ऐसा लगता था जैसे वर्षों तक यहाँ किसी ने बलि दी हो।

तभी...

मंदिर के दूसरे छोर से लकड़ी की छड़ी की आवाज़ आई।

टक... टक... टक...

एक बूढ़ा आदमी धीरे-धीरे अँधेरे से बाहर आया।

उसकी लंबी सफेद दाढ़ी थी।

हाथ में रुद्राक्ष की माला और एक पुराना त्रिशूल था।

उसने अर्जुन को देखते ही कहा—

"अगर ज़िंदा रहना चाहते हो... तो उस मूर्ति की आँखों में कभी मत देखना।"अर्जुन ने पूछा—

"आप कौन हैं?"बूढ़ा बोला—

"मेरा नाम **भैरवनाथ** है। मैं इस हवेली का आख़िरी रक्षक हूँ। पिछले चालीस वर्षों से मैं इसी मंदिर में कैद हूँ।"

"क्या आप मुझे यहाँ से बाहर निकाल सकते हैं?"

भैरवनाथ ने गहरी साँस ली।

"बाहर का रास्ता है... लेकिन पहले तुम्हें हवेली के असली शैतान को हराना होगा।"

"वह कौन है?"

भैरवनाथ ने काँपते हुए मूर्ति की ओर देखा।

"उसका नाम है... **कपालिक**।"

"वह इंसान था... लेकिन अमर होने की चाह में उसने ऐसा तंत्र किया कि उसकी आत्मा इस हवेली से बँध गई। मालती और उसका परिवार उसके शिकार बने।"

इतना कहते ही...

मूर्ति की लाल आँखें अचानक चमक उठीं।

मंदिर में तेज़ हवा चलने लगी।

और एक गूँजती हुई हँसी चारों ओर फैल गई—

"भैरवनाथ... तुमने फिर मेरा नाम ले लिया..."अगले ही पल...काले धुएँ से बना एक विशाल हाथ प्रकट हुआ...

और उसने भैरवनाथ का गला पकड़कर उसे हवा में उठा लिया।अर्जुन ने चीखकर उनकी ओर दौड़ लगाई...

लेकिन तभी पूरे मंदिर में एक साथ सैकड़ों आवाज़ें गूँज उठीं—

"अब अगली बलि... अर्जुन की होगी!"

भैरवनाथ हवा में तड़प रहे थे।

काले धुएँ का विशाल हाथ उनके गले को कसता जा रहा था।

अर्जुन पूरी ताकत से उनकी ओर दौड़ा।

उसने अपना चाँदी का ताबीज़ उठाकर उस धुएँ वाले हाथ पर दे मारा।

धाऽऽऽड़!

तेज़ सफेद प्रकाश पूरे मंदिर में फैल गया।

काला हाथ एक भयानक चीख के साथ गायब हो गया और भैरवनाथ ज़मीन पर गिर पड़े।

उन्होंने हाँफते हुए कहा, "अर्जुन... अब वह खुद आएगा..."

उसी क्षण मंदिर की सारी मशालें एक-एक करके बुझ गईं।

चारों ओर फिर से अँधेरा छा गया।

फिर मंदिर के बीच खड़ी काले पत्थर की मूर्ति में दरारें पड़ने लगीं।

चर्र... चर्र... चर्र...

एक ज़ोरदार धमाके के साथ मूर्ति टूट गई।

उसके भीतर से काला धुआँ निकलने लगा।

धुआँ धीरे-धीरे एक इंसान का रूप लेने लगा।

कुछ ही पल में वह आकृति साफ़ दिखाई देने लगी।

वह लगभग सात फ़ुट लंबा था।

पूरे शरीर पर राख पुती हुई थी।
गले में इंसानी खोपड़ियों की माला लटक रही थी।
उसकी आँखें जलते हुए अंगारों की तरह लाल थीं।
उसके माथे पर काले रंग का एक विचित्र चिन्ह बना था।
वह मुस्कुराया।
"मैं हूँ... कपालिक।"
उसकी आवाज़ पूरे मंदिर में गूँज उठी।
"सौ साल पहले लोग मुझसे डरते थे... आज भी डरते हैं... और सौ साल बाद भी डरेंगे।"
अर्जुन ने साहस जुटाकर पूछा,
"तुमने मालती और उसके परिवार के साथ क्या किया था?"
कपालिक की मुस्कान और चौड़ी हो गई।
"मैं अमर होना चाहता था। उसके लिए मुझे एक ऐसे परिवार की बलि चाहिए थी जो एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करता हो।"
"मालती का परिवार मुझे मिल गया..."
"लेकिन मरते समय मालती ने मुझे पूरी तरह अमर नहीं होने दिया। उसने अपनी आत्मा से मुझे इस हवेली में बाँध दिया।"
वह गुर्राया।
"अब मुझे मुक्त होने के लिए आख़िरी बलि चाहिए..."
उसने अपनी लाल आँखें अर्जुन पर टिकाईं।
"और वह बलि... तुम हो।"
अचानक मंदिर का फर्श चमकने लगा।
ज़मीन पर लाल रंग का एक विशाल तांत्रिक चक्र उभर आया।
अर्जुन के पैरों के नीचे की मिट्टी पत्थर बन गई।
वह हिल भी नहीं पा रहा था।
कपालिक धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा।
हर कदम के साथ उसकी हँसी और डरावनी होती जा रही थी।
तभी...
भैरवनाथ ने अपनी बची हुई ताकत से त्रिशूल उठाया और ज़ोर से अर्जुन की ओर फेंका।
"अर्जुन! इसे पकड़ो!"
अर्जुन ने किसी तरह हाथ बढ़ाकर त्रिशूल पकड़ लिया।
जैसे ही उसने त्रिशूल को छुआ...
उसकी आँखों के सामने एक अजीब दृश्य उभर आया।
उसे सौ साल पुरानी घटना दिखाई देने लगी।

मालती रो रही थी...

हवेली में आग लगी हुई थी...

और कपालिक किसी नकाबपोश आदमी के सामने घुटनों के बल झुका हुआ था।

अर्जुन हैरान रह गया।

"यह कैसे हो सकता है?"

अगर कपालिक सबसे बड़ा शैतान था...

तो वह उस रहस्यमयी नकाबपोश के सामने सिर क्यों झुका रहा था?

दृश्य अचानक समाप्त हो गया।

अर्जुन ने कपालिक की ओर देखा।

पहली बार...

कपालिक के चेहरे पर डर साफ़ दिखाई दे रहा था।

उसने गुस्से में दहाड़ते हुए कहा—

"तुमने वह नहीं देखना चाहिए था!"

मंदिर ज़ोर-ज़ोर से काँपने लगा...

और अँधेरे में कहीं से वही नकाबपोश आदमी धीरे-धीरे अर्जुन की ओर बढ़ने लगा।

पूरा मंदिर काँप रहा था।

पत्थरों की दरारों से काला धुआँ निकल रहा था।

अर्जुन ने त्रिशूल को कसकर पकड़ रखा था।

अँधेरे में खड़ा नकाबपोश आदमी धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

उसके काले कपड़े ज़मीन तक लटक रहे थे। चेहरे पर चाँदी का पुराना मुखौटा था, जिस पर अजीब तांत्रिक चिन्ह बने थे।

जैसे ही वह मशाल की रोशनी में आया...

कपालिक एक कदम पीछे हट गया।

हाँ...

वही कपालिक, जिससे पूरी हवेली काँपती थी।

वह पहली बार डरा हुआ दिखाई दे रहा था।

नकाबपोश ने भारी आवाज़ में कहा—

"कपालिक... तुम्हारा समय समाप्त होने वाला है।"

कपालिक गरजा—

"नहीं! जब तक अंतिम बलि पूरी नहीं होती, मुझे कोई नहीं रोक सकता।"

नकाबपोश ने अर्जुन की ओर देखा।

"अगर इसे बचाना है... तो सच जानना होगा।"

उसने धीरे-धीरे अपना मुखौटा उतारना शुरू किया।

अर्जुन साँस रोके खड़ा था।

मुखौटा ज़मीन पर गिरा।

चेहरा दिखाई दिया...

और अर्जुन के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

वह चेहरा बिल्कुल भैरवनाथ जैसा था।

लेकिन भैरवनाथ तो उसके पीछे खड़े थे!

अर्जुन ने घबराकर पीछे देखा।

वहाँ भैरवनाथ मौजूद थे।

फिर सामने देखा...

वहाँ भी वही चेहरा।

दो-दो भैरवनाथ!

अर्जुन समझ नहीं पा रहा था कि असली कौन है।

तभी पीछे खड़े भैरवनाथ चिल्लाए—

"अर्जुन! उसकी बातों में मत आना!"

लेकिन सामने खड़े नकाबपोश ने शांत स्वर में कहा—

"अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ... तो यह त्रिशूल तुम्हारे हाथ में चमकेगा नहीं।"

अर्जुन ने त्रिशूल की ओर देखा।

त्रिशूल से हल्की सुनहरी रोशनी निकल रही थी।

तभी नकाबपोश बोला—

"मैं भैरवनाथ नहीं हूँ...

मैं उनका जुड़वाँ भाई रुद्रनाथ हूँ।"

"सौ साल पहले मैं और मेरा भाई इस हवेली में कपालिक को रोकने आए थे।"

"लेकिन मेरे भाई ने शक्ति के लालच में कपालिक से समझौता कर लिया..."

अर्जुन का दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

उसने धीरे-धीरे पीछे खड़े भैरवनाथ की ओर देखा।

भैरवनाथ की आँखें अब लाल हो चुकी थीं।

उनके चेहरे पर एक डरावनी मुस्कान फैल गई।

वह ज़ोर से हँसे।

"आख़िर... सच सामने आ ही गया।"

उनका शरीर काले धुएँ में बदलने लगा।

कुछ ही क्षणों में उनका बूढ़ा रूप गायब हो गया।

अब वहाँ एक लंबा, भयानक तांत्रिक खड़ा था।

उसने अर्जुन से कहा—

"मैंने तुम्हें यहाँ तक इसलिए पहुँचाया...
ताकि तुम मेरे लिए श्राप तोड़ दो।"
कपालिक भी मुस्कुरा उठा।
दोनों ने एक साथ अर्जुन की ओर देखा।
रुद्रनाथ ने त्रिशूल उठाते हुए कहा—
"अर्जुन!
अब तुम्हें दोनों से एक साथ लड़ना होगा।
लेकिन याद रखो...
इनमें से सिर्फ़ एक को हराने से कुछ नहीं होगा।
जब तक हवेली का 'हृदय' नष्ट नहीं होगा...
यह श्राप कभी समाप्त नहीं होगा।"
उसी समय मंदिर के बीचों-बीच की ज़मीन फट गई।
नीचे एक विशाल गड्ढा दिखाई दिया।
उसकी गहराई में...
एक धड़कता हुआ काला पत्थर था।
वह बिल्कुल किसी इंसानी दिल की तरह धड़क रहा था।
धक... धक... धक...
और हर धड़कन के साथ पूरी हवेली काँप रही थी।
कपालिक मुस्कुराया और बोला—
**"यही है इस हवेली का हृदय...
और जो इसे छुएगा...
वह हमेशा के लिए इसकी आत्माओं में शामिल हो जाएगा।"**
अर्जुन ने त्रिशूल को और कसकर पकड़ लिया...
क्योंकि अब लौटने का कोई रास्ता नहीं बचा था।
धक... धक... धक...
काले पत्थर की हर धड़कन के साथ पूरी हवेली काँप रही थी।
छत से धूल गिर रही थी। मंदिर की दीवारों में दरारें पड़ने लगी थीं।
अर्जुन गड्ढे के किनारे खड़ा था। नीचे धड़कता हुआ काला पत्थर किसी जीवित दिल की तरह सिकुड़ और फैल रहा था।
रुद्रनाथ चिल्लाए—
"अर्जुन! यही श्राप का स्रोत है। इसे नष्ट किए बिना कोई नहीं बचेगा।"
लेकिन तभी कपालिक ज़ोर से हँसा।
"उसे पूरा सच तो बता दो, रुद्रनाथ।"

अर्जुन ने उनकी ओर देखा।

कपालिक बोला—

"अगर इस पत्थर को त्रिशूल से तोड़ा गया... तो हवेली की सारी कैद आत्माएँ मुक्त हो जाएँगी।"

वह कुछ पल रुका और मुस्कुराया।

"लेकिन... त्रिशूल चलाने वाला भी जीवित नहीं बचेगा।"

यह सुनते ही अर्जुन का चेहरा सफेद पड़ गया।

रुद्रनाथ ने सिर झुका लिया।

"हाँ... यह सच है।"

"इस श्राप को तोड़ने के लिए किसी एक को अपना जीवन देना ही होगा।"

अर्जुन के मन में अपनी माँ, पिता और घर की यादें उमड़ पड़ीं।

क्या उसकी कहानी यहीं खत्म हो जाएगी?

उसी समय...

मंदिर में ठंडी हवा का झोंका चला।

सफेद प्रकाश फैल गया।

उस रोशनी में मालती की आत्मा दिखाई दी।

इस बार उसके चेहरे पर डर नहीं, शांति थी।

वह अर्जुन के सामने आई और बोली—

"नहीं... अभी एक और रास्ता है।"

कपालिक का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

"चुप रहो!"

मालती ने उसकी ओर देखे बिना कहा—

"श्राप सिर्फ़ बलिदान से नहीं टूटेगा।"

"जिसने इसे बनाया था... उसे अपने पाप स्वीकार करने होंगे।"

अर्जुन समझ नहीं पाया।

"लेकिन कपालिक ऐसा कभी नहीं करेगा।"

मालती की आँखों में आँसू आ गए।

"कपालिक अकेला दोषी नहीं था।"

"उस रात..."

"मेरे अपने पति ने लालच में उसका साथ दिया था।"

अर्जुन स्तब्ध रह गया।

यानी हवेली के श्राप की शुरुआत सिर्फ़ तंत्र-मंत्र से नहीं...

विश्वासघात से हुई थी।

अचानक मंदिर में एक और आवाज़ गूँजी।

"मालती..."

सभी ने पीछे मुड़कर देखा।

अँधेरे से एक धुंधली आकृति बाहर आई।

वह एक अधेड़ आदमी था, जिसके कपड़े फटे हुए थे।

उसकी आँखों में गहरा पछतावा था।

मालती की आँखों से आँसू बह निकले।

"वीरेंद्र..."

वह उसका पति था।

सौ साल बाद पहली बार उसकी आत्मा सामने आई थी।

वीरेंद्र काँपती आवाज़ में बोला—

"मैंने धन के लालच में अपने परिवार को खो दिया।"

"कपालिक ने मुझे अमीरी का सपना दिखाया..."

"और मैंने उसी रात सबसे बड़ा पाप कर दिया।"

कपालिक क्रोध से दहाड़ उठा।

"चुप!"

उसने अपने हाथ उठाए।

पूरा मंदिर काले धुएँ से भर गया।

सैकड़ों भयानक आत्माएँ अर्जुन, मालती और वीरेंद्र की ओर बढ़ने लगीं।

रुद्रनाथ ने त्रिशूल उठाया और चिल्लाए—

"अर्जुन! अब फैसला तुम्हें करना होगा।"

"या तो काले हृदय को नष्ट करो..."

"या वीरेंद्र की आत्मा को कपालिक के सामने सच स्वीकार करने का अवसर दो।"

लेकिन तभी...

काला पत्थर पहले से कहीं तेज़ धड़कने लगा।

धक! धक! धक! धक!

और उसकी सतह पर एक लंबी दरार उभर आई।

दरार के भीतर से...

एक विशाल, चमकती हुई लाल आँख धीरे-धीरे खुलने लगी।

वह आँख किसी इंसान की नहीं थी।

वह किसी ऐसी प्राचीन शक्ति की थी...

जो कपालिक से भी कहीं अधिक भयानक थी।

धक! धक! धक!

काले पत्थर की दरार और चौड़ी होती गई।

उसके भीतर से झाँकती लाल आँख अब पूरी तरह खुल चुकी थी।
जैसे ही उसने अर्जुन की ओर देखा, पूरे मंदिर में एक ऐसी गर्जना गूँजी कि पत्थर के खंभे तक हिल उठे।
कपालिक पहली बार घुटनों के बल बैठ गया।
उसने अपना सिर झुका लिया और काँपती आवाज़ में कहा—
"प्रभु... मुझे क्षमा कीजिए।"
अर्जुन यह देखकर हैरान रह गया।
जिस कपालिक से पूरी हवेली डरती थी...
वह स्वयं किसी और के सामने झुक रहा था।
काले पत्थर के भीतर से गहरी, भारी आवाज़ आई—
"कपालिक... सौ वर्ष बीत गए। फिर भी तुम मुझे मुक्त नहीं कर सके।"
पत्थर में पड़ी दरार अचानक फट गई।
काले धुएँ का एक विशाल बवंडर उठा।
उस धुएँ से एक विराट आकृति धीरे-धीरे बाहर आने लगी।
उसका शरीर धुएँ से बना था।
सिर पर टूटे हुए मुकुट जैसा आकार था।
आँखें आग की तरह जल रही थीं।
लेकिन उसके पैरों की जगह केवल काला धुआँ था।
उसकी ऊँचाई लगभग पंद्रह फ़ुट थी।
जैसे ही वह पूरी तरह प्रकट हुआ, हवेली की हर दीवार से चीखों की आवाज़ आने लगी।
सैकड़ों कैद आत्माएँ एक साथ चिल्ला उठीं।
रुद्रनाथ ने काँपते हुए कहा—
"यही है... 'अंधकार सम्राट'।"
"कपालिक तो केवल इसका सेवक था।"
अंधकार सम्राट की नज़र अर्जुन पर पड़ी।
वह मुस्कुराया।
"तो... यही है वह मनुष्य..."
"जिसका इंतज़ार मुझे सौ वर्षों से था।"
अर्जुन ने त्रिशूल कसकर पकड़ लिया।
"तुम मुझसे क्या चाहते हो?"
अंधकार सम्राट की हँसी पूरे मंदिर में गूँज उठी।
"तुम्हारा शरीर नहीं..."
"तुम्हारा साहस।"
"जो मनुष्य सबसे बड़े भय के सामने भी नहीं झुकता...

उसी की आत्मा सबसे शक्तिशाली बनती है।"

इतना कहते ही उसने अपना हाथ उठाया।

एक पल में अर्जुन के चारों ओर सब कुछ बदल गया।

मंदिर गायब हो गया।

हवेली गायब हो गई।

अर्जुन खुद को अपने बचपन के घर में खड़ा पाया।

उसकी माँ रसोई में थीं।

पिता मुस्कुरा रहे थे।

सब कुछ बिल्कुल वास्तविक लग रहा था।

माँ ने मुस्कुराकर कहा—

"अर्जुन, बेटा... घर चलो। सब ठीक हो गया।"

अर्जुन की आँखों में आँसू आ गए।

वह उनकी ओर बढ़ा...

लेकिन तभी उसकी जेब में रखा चाँदी का ताबीज़ गर्म हो गया।

उसे मालती की आवाज़ सुनाई दी—

"याद रखो... जो सबसे सुंदर दिखाई दे, वही सबसे बड़ा छल भी हो सकता है।"

अर्जुन रुक गया।

उसने ध्यान से अपनी माँ के पैरों की ओर देखा।

उनके पैर...

ज़मीन को छू ही नहीं रहे थे।

अर्जुन का चेहरा सख्त हो गया।

उसने त्रिशूल ज़मीन पर दे मारा।

धाऽऽऽड़!

पूरा दृश्य टूटकर काँच की तरह बिखर गया।

वह फिर उसी मंदिर में था।

अंधकार सम्राट पहली बार मुस्कुराना बंद कर चुका था।

उसने धीमी आवाज़ में कहा—

**"अच्छा... तुमने मेरा पहला भ्रम तोड़ दिया।"

"अब देखते हैं... दूसरा भ्रम कैसे तोड़ते हो।"**

इतना कहते ही...

मंदिर के बीचों-बीच ज़मीन फट गई।

उस गहरी दरार से...

एक के बाद एक...

अर्जुन के दस हमशक्ल बाहर निकलने लगे।

सभी के हाथ में त्रिशूल था।

सभी का चेहरा बिल्कुल अर्जुन जैसा था।

और सभी ने एक साथ कहा—

"अगर असली अर्जुन हो... तो खुद को पहचान कर दिखाओ।"

मंदिर में अब ग्यारह अर्जुन खड़े थे।

हर एक के हाथ में वही त्रिशूल...

वही कपड़े...

वही चेहरा...

यहाँ तक कि सबकी साँसें भी एक जैसी लग रही थीं।

रुद्रनाथ, मालती और वीरेंद्र भी समझ नहीं पा रहे थे कि असली अर्जुन कौन है।

अंधकार सम्राट की गूँजती हुई हँसी मंदिर में फैल गई।

"अगर तुम अपनी पहचान नहीं बचा सके... तो इस हवेली में हमेशा के लिए खो जाओगे।"

अचानक सभी हमशक्ल एक साथ अर्जुन पर टूट पड़े।

त्रिशूलों की टक्कर से चिंगारियाँ उड़ने लगीं।

टन... टन... टन...!

अर्जुन ने एक के बाद एक कई वार रोके, लेकिन हर हमशक्ल उतना ही तेज़ और शक्तिशाली था जितना वह खुद।

उसी समय मालती की आवाज़ उसके कानों में गूँजी—

"अर्जुन... बुराई कभी धैर्य नहीं रख सकती।"

यह सुनते ही अर्जुन रुक गया।

उसने हमला करना बंद कर दिया।

बाकी दस हमशक्ल लगातार उस पर वार करते रहे।

अर्जुन सिर्फ़ बचाव करता रहा।

कुछ ही क्षणों बाद...

एक हमशक्ल गुस्से से चिल्लाया—

"खत्म कर दो इसे!"

बाकी सभी भी क्रोध में चीखने लगे।

अर्जुन मुस्कुराया।

"यही तुम्हारी गलती थी।"

उसने अपना त्रिशूल ज़मीन में गाड़ दिया।

त्रिशूल से सुनहरी रोशनी चारों ओर फैल गई।

जिस रोशनी ने सभी नकली अर्जुनों को छू लिया, वे धुएँ में बदलने लगे।

एक-एक करके दसों हमशक्ल चीखते हुए गायब हो गए।

अब मंदिर में केवल एक अर्जुन खड़ा था।

अंधकार सम्राट की आँखों में पहली बार क्रोध दिखाई दिया।

"तुमने दूसरा भ्रम भी तोड़ दिया..."

"लेकिन आख़िरी परीक्षा सबसे कठिन है।"

उसने दोनों हाथ आकाश की ओर उठा दिए।

पूरे मंदिर में भूकंप जैसा कंपन होने लगा।

हवेली की दीवारों से काली ऊर्जा निकलकर उसके शरीर में समाने लगी।

अचानक कपालिक दर्द से चीख उठा।

"नहीं... प्रभु... ऐसा मत कीजिए!"

अंधकार सम्राट ने उसकी ओर देखा।

"तुम असफल रहे। अब तुम्हारी शक्ति मुझे वापस चाहिए।"

अगले ही पल कपालिक का शरीर धुएँ में बदलने लगा।

वह तड़पता रहा...

चीखता रहा...

और कुछ ही क्षणों में उसकी पूरी शक्ति अंधकार सम्राट में समा गई।

अब वह पहले से कई गुना अधिक विशाल और शक्तिशाली हो चुका था।

उसकी आवाज़ बिजली की गड़गड़ाहट जैसी हो गई।

"अब कोई मुझे रोक नहीं सकता!"

तभी...

मालती आगे बढ़ी।

उसने अर्जुन के कंधे पर हाथ रखा और कहा—

"हर अंधकार की एक कमजोरी होती है..."

"इस सम्राट की भी है।"

"लेकिन उसे हराने के लिए तुम्हें उस जगह जाना होगा जहाँ यह श्राप पहली बार शुरू हुआ था..."

अर्जुन ने पूछा—

"वह जगह कहाँ है?"

मालती ने काँपते हुए हवेली की सबसे ऊपरी दिशा की ओर इशारा किया।

"हवेली की चौथी मंज़िल..."

रुद्रनाथ चौंक उठे।

"लेकिन... चौथी मंज़िल तो सौ साल पहले आग में जलकर नष्ट हो गई थी!"

मालती ने धीरे से कहा—

"जो लोगों को दिखाई नहीं देती... वही आज भी मौजूद है।"

उसी क्षण...

मंदिर की छत में एक गोलाकार प्रकाश-द्वार खुल गया।

उसके भीतर पत्थर की पुरानी सीढ़ियाँ ऊपर जा रही थीं।

अंधकार सम्राट मुस्कुराया।

"आओ अर्जुन... आख़िरी यात्रा शुरू करते हैं।"

और वह काले धुएँ में बदलकर उस प्रकाश-द्वार के भीतर गायब हो गया।

अर्जुन ने त्रिशूल को मज़बूती से पकड़ा...

और चौथी मंज़िल की ओर जाने वाली रहस्यमयी सीढ़ियाँ चढ़ना शुरू कर दिया।

पत्थर की सीढ़ियाँ खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थीं।

अर्जुन, रुद्रनाथ और मालती की आत्मा लगातार ऊपर बढ़ते जा रहे थे।

जितना वे ऊपर चढ़ते, हवा उतनी ही ठंडी होती जाती।

आख़िरकार अर्जुन आख़िरी सीढ़ी पर पहुँचा।

उसने सामने देखा...

और उसकी साँस थम गई।

वहाँ एक विशाल गलियारा था, लेकिन वह हवेली जैसा नहीं दिखता था।

दीवारें काली नहीं, बल्कि गहरे लाल रंग की थीं।

छत पर सैकड़ों पुराने झूमर जल रहे थे, जबकि उनमें कोई मोमबत्ती नहीं थी।

गलियारे के दोनों ओर दर्जनों दरवाज़े थे।

हर दरवाज़े पर एक नाम लिखा था।

अर्जुन ने पहला नाम पढ़ा—

"मोहन"

दूसरे पर—

"राघव"

तीसरे पर—

"मालती"

फिर उसने एक और दरवाज़े पर नज़र डाली...

उस पर लिखा था—

"अर्जुन"

उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई।

"यह... मेरा नाम?"

रुद्रनाथ धीमे स्वर में बोले—

"यह चौथी मंज़िल नहीं..."

"यह हवेली की स्मृतियों का लोक है।"

"यहाँ हर उस व्यक्ति का एक कमरा है, जिसकी आत्मा कभी इस हवेली से जुड़ी।"

अचानक अर्जुन वाले दरवाज़े के भीतर से किसी ने धीरे-धीरे दस्तक दी।

ठक... ठक... ठक...

फिर एक आवाज़ आई—

"दरवाज़ा खोलो... मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ।"

आवाज़ बिल्कुल अर्जुन जैसी थी।

रुद्रनाथ चिल्लाए—

"मत खोलना!"

लेकिन जैसे ही उन्होंने यह कहा...

बाकी सभी दरवाज़े अपने आप खुलने लगे।

एक कमरे से मोहन बाहर निकला।

दूसरे से राघव।

तीसरे से वे लोग, जिन्हें अर्जुन ने पहले केवल आत्माओं के रूप में देखा था।

वे सब शांत थे।

किसी के चेहरे पर डर नहीं था।

सभी एक साथ अर्जुन की ओर देखने लगे।

फिर उन्होंने एक ही बात कही—

"हमें मुक्त कर दो..."

उसी समय...

गलियारे के अंत में अंधकार सम्राट प्रकट हुआ।

उसके पीछे काला धुआँ घूम रहा था।

वह मुस्कुराया।

"ये सब मेरी कैद में नहीं हैं..."

"ये अपनी यादों की कैद में हैं।"

"मनुष्य का सबसे बड़ा कारागार उसका अपना अतीत होता है।"

अर्जुन ने त्रिशूल उठाया।

"आज यह कैद खत्म होगी।"

अंधकार सम्राट हँस पड़ा।

"तो पहले अपना दरवाज़ा खोलो।"

"अगर अपने अतीत का सामना कर लिया..."

"तभी दूसरों को मुक्त कर पाओगे।"

अर्जुन धीरे-धीरे अपने नाम वाले दरवाज़े के सामने पहुँचा।

उसका हाथ कुंडी पर गया।

रुद्रनाथ ने फिर चेतावनी दी—

"एक बार यह दरवाज़ा खुल गया..."

"तो जो दिखाई देगा, उसे बदल नहीं सकोगे।"

अर्जुन ने गहरी साँस ली...

और दरवाज़ा खोल दिया।

अंदर जो कमरा था, उसे देखकर उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

कमरे की दीवारों पर...

उसकी ज़िंदगी की तस्वीरें टंगी थीं।

बचपन...

स्कूल...

कॉलेज...

हर याद वहाँ मौजूद थी।

लेकिन सबसे आख़िरी तस्वीर नई थी।

उसमें अर्जुन की तस्वीर पर काली माला चढ़ी हुई थी।

और नीचे लिखा था—

"मृत्यु की तिथि: आज की रात।"

उसी पल कमरे के सबसे अँधेरे कोने से एक परिचित आवाज़ आई—

"तुम समय पर आ गए... अर्जुन।"

वह आवाज़...

अर्जुन के अपने पिता की थी।

लेकिन उसके पिता तो वर्षों पहले इस हवेली में कभी आए ही नहीं थे...

या शायद...

उसे अब तक यही लगता था।

कमरे में गहरा सन्नाटा छाया हुआ था।

अर्जुन का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

अँधेरे कोने से एक आदमी धीरे-धीरे बाहर आया।

उसे देखते ही अर्जुन की आँखें फैल गईं।

"पा... पापा?"

वह सचमुच उसके पिता थे।

वही चेहरा...

वही आवाज़...

वही मुस्कान...

लेकिन उनके बाल पूरी तरह सफ़ेद हो चुके थे और आँखों में वर्षों का दर्द साफ़ दिखाई दे रहा था।

अर्जुन काँपती आवाज़ में बोला,

"आप... यहाँ कैसे?"

उसके पिता ने गहरी साँस ली।

"बेटा... आज वह सच जानने का समय आ गया है, जिसे मैं पूरी ज़िंदगी छिपाता रहा।"

उन्होंने दीवार पर टंगी एक पुरानी तस्वीर उतारी।

तस्वीर में एक जवान आदमी, रुद्रनाथ और अर्जुन के पिता साथ खड़े थे।

उनके पीछे वही काली हवेली दिखाई दे रही थी।

"यह तस्वीर पच्चीस साल पुरानी है," पिता बोले।

"मैं, रुद्रनाथ और मेरा दोस्त रवि इस हवेली में आए थे।"

"हम भी सच जानना चाहते थे..."

"लेकिन हमने एक बहुत बड़ी गलती कर दी।"

अर्जुन ने पूछा,

"कौन-सी गलती?"

पिता की आँखें भर आईं।

"हमने हवेली के हृदय को छेड़ दिया।"

"उस रात रवि मारा गया..."

"मैं किसी तरह बच निकला..."

"लेकिन अपनी आत्मा का एक हिस्सा यहीं छोड़ आया।"

अर्जुन स्तब्ध रह गया।

"इसका मतलब..."

"हाँ," पिता बोले।

"इसीलिए यह हवेली तुम्हें बुला रही थी।"

"यह श्राप हमारे परिवार से भी जुड़ चुका है।"

तभी कमरे में अचानक ठंडी हवा चलने लगी।

दीवारों पर लगी सारी तस्वीरें एक-एक करके गिरने लगीं।

धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम!

अंधकार सम्राट की आवाज़ पूरे कमरे में गूँज उठी—

"बहुत हो गई सच्चाई..."

"अब अंत का समय आ गया है।"

कमरे की दीवारें पिघलने लगीं।

चारों ओर काला धुआँ फैल गया।

धुएँ के बीच एक विशाल दरबार दिखाई दिया।

बीच में काले पत्थर का सिंहासन था।

उस पर अंधकार सम्राट बैठा था।

उसकी आँखें अब पहले से भी अधिक चमक रही थीं।

उसने अर्जुन के पिता की ओर देखकर कहा—

"तुम उस रात बच तो गए थे..."

"लेकिन आज तुम्हारा अधूरा हिसाब पूरा होगा।"

उसने अपना हाथ उठाया।

काली ज़ंजीरें हवा में प्रकट हुईं और अर्जुन के पिता को जकड़ लिया।

अर्जुन चीखा—

"नहीं!"

वह उनकी ओर दौड़ा, लेकिन अदृश्य शक्ति ने उसे रोक दिया।

रुद्रनाथ ने त्रिशूल अर्जुन की ओर बढ़ाया।

"याद रखो... डर से नहीं, सत्य से लड़ना।"

अर्जुन ने पूरी शक्ति से त्रिशूल उठाया।

त्रिशूल से तेज़ सुनहरी रोशनी निकली।

वह सीधे अंधकार सम्राट की ओर बढ़ी।

लेकिन...

जैसे ही प्रकाश उसके पास पहुँचा...

वह अचानक दो हिस्सों में बँट गया।

उस प्रकाश के बीच से...

एक और आकृति बाहर आई।

उस आकृति को देखकर अंधकार सम्राट पहली बार भय से काँप उठा।

उसने धीमी आवाज़ में कहा—

"नहीं... यह असंभव है..."

अर्जुन ने उस रहस्यमयी आकृति की ओर देखा।

वह एक तेजस्वी साधु थे, जिनके पूरे शरीर से प्रकाश निकल रहा था।

उन्होंने अर्जुन की ओर देखकर कहा—

"अब अंतिम युद्ध शुरू होगा..."

और उसी क्षण पूरी हवेली की नींव हिलने लगी...

मानो सौ वर्षों से प्रतीक्षा किया हुआ समय आखिर आ पहुँचा हो।पूरी हवेली ज़ोर-ज़ोर से काँप रही थी।

दीवारों से धूल गिर रही थी।

सैकड़ों आत्माओं की चीखें एक साथ गूँज रही थीं।

अंधकार सम्राट अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ।

उसकी लाल आँखें उस तेजस्वी साधु पर टिकी थीं।

वह गुर्राया—

"आचार्य... तुम फिर लौट आए!"
अर्जुन ने आश्चर्य से साधु की ओर देखा।
"आप कौन हैं?"
साधु मुस्कुराए।
"मेरा नाम आचार्य दिव्यानंद है।"
"सौ वर्ष पहले मैंने कपालिक को रोकने की कोशिश की थी।"
"मैं उसे हरा तो नहीं सका, लेकिन अपनी बची हुई शक्ति इस त्रिशूल में बाँध दी..."
उन्होंने अर्जुन के हाथ में पकड़े त्रिशूल की ओर देखा।
"इसीलिए यह त्रिशूल केवल उस व्यक्ति का साथ देता है जिसका हृदय भय से नहीं, सत्य से भरा हो।"
अंधकार सम्राट क्रोध से गरजा।
उसने दोनों हाथ उठाए।
पूरे दरबार में काला तूफ़ान उठ खड़ा हुआ।
पत्थर हवा में उड़ने लगे।
हज़ारों काली आत्माएँ आचार्य और अर्जुन की ओर झपट पड़ीं।
आचार्य दिव्यानंद ने आँखें बंद कीं।
उन्होंने एक प्राचीन मंत्र का उच्चारण किया।
अचानक उनके चारों ओर सुनहरी रोशनी का एक विशाल घेरा बन गया।
जैसे ही काली आत्माएँ उस घेरे से टकराईं...
वे चीखते हुए राख बन गईं।
अंधकार सम्राट और भी क्रोधित हो गया।
उसने अपनी पूरी शक्ति एकत्र की।
उसका शरीर धुएँ से बढ़कर विशाल पर्वत जैसा हो गया।
उसने गर्जना की—
"आज या तो अंधकार रहेगा... या प्रकाश!"
उसी क्षण त्रिशूल अर्जुन के हाथ से निकलकर हवा में उठ गया।
वह तेज़ी से चमकने लगा।
आचार्य बोले—
"अर्जुन! अंतिम शक्ति पाने के लिए तुम्हें अपने भीतर के डर को हराना होगा।"
अचानक सब कुछ बदल गया।
अर्जुन फिर से अकेला था।
न हवेली...
न आचार्य...
न अंधकार सम्राट।

वह एक शांत मैदान में खड़ा था।

सामने एक छोटा लड़का बैठा रो रहा था।

अर्जुन पास गया।

वह लड़का धीरे-धीरे सिर उठाता है...

और अर्जुन दंग रह जाता है।

वह लड़का...

खुद अर्जुन था।

उसका बचपन।

छोटा अर्जुन बोला—

"मैं हमेशा डरता रहा कि मैं अपने परिवार को खो दूँगा।"

"तुम बड़े हो गए...

लेकिन मेरा डर अपने साथ ले आए।"

अर्जुन की आँखों से आँसू बह निकले।

वह घुटनों के बल बैठ गया।

उसने अपने बचपन वाले रूप को गले लगा लिया।

उसी क्षण वह छोटा अर्जुन प्रकाश में बदल गया...

और अर्जुन के शरीर में समा गया।

दूर खड़े आचार्य की आवाज़ गूँजी—

"जिसने अपने डर को स्वीकार कर लिया... उसे कोई अंधकार नहीं हरा सकता।"

अर्जुन ने आँखें खोलीं।

वह फिर उसी दरबार में था।

अब उसके शरीर से भी हल्की सुनहरी आभा निकल रही थी।

त्रिशूल उसके हाथ में वापस आ चुका था।

अंधकार सम्राट पहली बार पीछे हट गया।

लेकिन तभी...

उसने ज़ोर से हँसते हुए कहा—

"बहुत देर हो चुकी है..."

उसने अपना हाथ हवेली के धड़कते हृदय की ओर बढ़ाया।

काला पत्थर अचानक टूट गया।

उसके भीतर से...

एक नहीं...

हज़ारों लाल आँखें एक साथ खुल गईं।

पूरी हवेली अंधकार में डूब गई।

और एक ऐसी गर्जना गूँजी...
जो इंसान की नहीं थी ।पूरी हवेली अंधकार में डूब चुकी थी ।
जहाँ कुछ क्षण पहले केवल एक लाल आँख थी...
अब वहाँ हज़ारों लाल आँखें अर्जुन को घूर रही थीं ।
हर आँख से एक ही आवाज़ आ रही थी—
"हमें मुक्त करो..."
"हमें मुक्त करो..."
दीवारें काँपने लगीं ।
फर्श में लंबी-लंबी दरारें पड़ गईं ।
अचानक हवेली के बीचों-बीच एक विशाल काला द्वार प्रकट हुआ ।
वह किसी पत्थर का नहीं था ।
वह पूरी तरह घूमते हुए काले धुएँ से बना था ।
उसके भीतर से बर्फ जैसी ठंडी हवा निकल रही थी ।
आचार्य दिव्यानंद का चेहरा गंभीर हो गया ।
उन्होंने धीमे स्वर में कहा—
"यह अंधकार का द्वार है..."
"अगर यह पूरी तरह खुल गया...
तो केवल यह हवेली नहीं...
पूरा संसार इसकी चपेट में आ जाएगा ।"
अंधकार सम्राट ज़ोर से हँसा ।
"सौ वर्षों की तपस्या आज पूरी होगी!"
उसने दोनों हाथ फैलाए ।
द्वार धीरे-धीरे खुलने लगा ।
उसके भीतर से काले धुएँ की अनगिनत लहरें बाहर आने लगीं ।
हर लहर किसी भयानक चेहरे का रूप लेकर हवा में उड़ रही थी ।
अर्जुन ने त्रिशूल उठाया और पूरी ताकत से द्वार की ओर दौड़ा ।
लेकिन तभी...
एक काली आकृति उसके सामने आ खड़ी हुई ।
वह कपालिक था ।
हालाँकि उसकी शक्ति कम हो चुकी थी, फिर भी वह बेहद खतरनाक लग रहा था ।
उसने अर्जुन का रास्ता रोक लिया ।
"जब तक मैं हूँ...
तुम उस द्वार तक नहीं पहुँच सकते ।"

अर्जुन ने बिना कुछ कहे त्रिशूल से वार किया।

कपालिक ने अपने काले दंड से उसे रोक लिया।

दोनों के हथियार टकराए।

टन्न्न...!

इतनी तेज़ चमक हुई कि पूरा दरबार रोशनी से भर गया।

दोनों के बीच भयंकर युद्ध शुरू हो गया।

कभी त्रिशूल आगे बढ़ता...

कभी कपालिक का दंड।

आचार्य दिव्यानंद अंधकार सम्राट को रोकने की कोशिश कर रहे थे।

रुद्रनाथ कैद आत्माओं को मुक्त करने के लिए मंत्र पढ़ रहे थे।

मालती और वीरेंद्र एक-दूसरे का हाथ पकड़े प्रार्थना कर रहे थे।

युद्ध अपने चरम पर पहुँच चुका था।

अचानक अर्जुन को कपालिक की गर्दन में एक पुराना ताबीज़ दिखाई दिया।

वही ताबीज़...

जो उसने पहले मालती की डायरी में बने चित्र में देखा था।

मालती ज़ोर से चिल्लाई—

"अर्जुन! उसकी शक्ति उस ताबीज़ में बँधी है!"

अर्जुन ने पूरी ताकत से छलाँग लगाई।

कपालिक ने वार रोकने की कोशिश की...

लेकिन देर हो चुकी थी।

त्रिशूल सीधे ताबीज़ से टकराया।

धाऽऽऽड़!

ताबीज़ हज़ारों टुकड़ों में बिखर गया।

कपालिक दर्द से ऐसी चीख मारता है कि पूरी हवेली गूँज उठती है।

उसका शरीर धीरे-धीरे राख में बदलने लगा।

मरने से पहले उसने अर्जुन की ओर देखा।

उसकी आँखों में पहली बार पश्चाताप था।

वह धीमे स्वर में बोला—

"मैंने... लालच में सब कुछ खो दिया..."

इतना कहकर कपालिक हवा में बिखर गया।

लेकिन उसी क्षण...

अंधकार का द्वार पूरी तरह खुल गया।

उसके भीतर से एक विशाल काला हाथ बाहर निकला।

वह हाथ इतना बड़ा था कि उसने पूरी हवेली को अपनी मुट्ठी में समेट लिया।

अंधकार सम्राट मुस्कुराया और बोला—

"अब... कोई मुझे नहीं रोक सकता।"

तभी आचार्य दिव्यानंद ने अर्जुन की ओर देखा और कहा—

**"अंतिम समय आ गया है...

अब तुम्हें वह निर्णय लेना होगा...

जो तुम्हारा नाम हमेशा के लिए इतिहास में लिख देगा।"**

विशाल काला हाथ पूरी हवेली को अपनी मुट्ठी में दबाने लगा।

पत्थर टूटने लगे।

दीवारों में आग की लपटें उठने लगीं।

आसमान काला पड़ चुका था।

अंधकार सम्राट ने दोनों हाथ फैलाकर गर्जना की—

"आज से यह संसार मेरा होगा!"

अर्जुन ने त्रिशूल को कसकर पकड़ा।

उसकी आँखों में अब डर नहीं था।

सिर्फ़ एक दृढ़ संकल्प था।

आचार्य दिव्यानंद उसके पास आए और बोले—

"अर्जुन... याद है मैंने कहा था कि हर अंधकार की एक जड़ होती है?"

अर्जुन ने सिर हिलाया।

आचार्य ने टूटे हुए काले पत्थर की ओर इशारा किया।

वहाँ अब भी एक छोटी-सी काली लौ जल रही थी।

वह लौ शांत थी, लेकिन उसकी हर धड़कन से अंधकार सम्राट और शक्तिशाली होता जा रहा था।

"यही उसकी वास्तविक शक्ति है," आचार्य बोले।

"जब तक यह लौ जलती रहेगी, अंधकार कभी समाप्त नहीं होगा।"

अर्जुन आगे बढ़ा।

लेकिन अंधकार सम्राट उसके सामने आ गया।

उसने एक ही वार में अर्जुन को कई कदम पीछे फेंक दिया।

त्रिशूल दूर जा गिरा।

अर्जुन के कंधे से खून बहने लगा।

मालती चीख उठी—

"अर्जुन!"

रुद्रनाथ मंत्र पढ़ते रहे, लेकिन उनकी शक्ति कम पड़ने लगी।

आचार्य दिव्यानंद ने अपनी आँखें बंद कीं।

उन्होंने अपनी सारी आध्यात्मिक शक्ति त्रिशूल में प्रवाहित कर दी।
त्रिशूल फिर से सुनहरी आभा से चमकने लगा।
उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा—
"अर्जुन! प्रकाश बाहर नहीं, तुम्हारे भीतर है!"
अर्जुन ने दर्द सहते हुए त्रिशूल उठाया।
वह पूरी ताकत से दौड़ा।
अंधकार सम्राट ने उसे रोकने के लिए काले भाले, धुएँ के साये और अग्नि की दीवारें खड़ी कर दीं।
लेकिन अर्जुन रुका नहीं।
वह एक-एक बाधा पार करता गया।
आख़िरकार वह उस काली लौ तक पहुँच गया।
अंधकार सम्राट चीखा—
"नहीं! उसे मत छूना!"
अर्जुन ने त्रिशूल उठाया...
और पूरी शक्ति से उस काली लौ पर प्रहार कर दिया।
धाऽऽऽड़!!!
ऐसा विस्फोट हुआ कि पूरी हवेली सफेद प्रकाश से भर गई।
अंधकार सम्राट की चीख दूर-दूर तक गूँज उठी।
उसका शरीर दरकने लगा।
हज़ारों कैद आत्माएँ उसके भीतर से निकलकर आकाश की ओर उड़ने लगीं।
मालती ने वर्षों बाद मुस्कुराकर अपनी बेटी का हाथ पकड़ लिया।
वीरेंद्र की आत्मा ने सिर झुकाकर क्षमा माँगी।
रुद्रनाथ की आँखों में संतोष के आँसू आ गए।
लेकिन उसी क्षण...
अर्जुन ने महसूस किया कि उसके हाथ धीरे-धीरे पारदर्शी होने लगे हैं।
आचार्य दिव्यानंद शांत स्वर में बोले—
"श्राप टूट चुका है...
लेकिन हर विजय की एक कीमत होती है।"
अर्जुन मुस्कुराया।
"अगर इतने लोगों की मुक्ति के लिए मुझे जाना पड़े...
तो मुझे कोई दुख नहीं।"
उसकी आँखें धीरे-धीरे बंद होने लगीं।
उसी समय...
आसमान से एक चमकदार किरण उतरी और अर्जुन के शरीर पर पड़ी।

लेकिन कुछ अजीब हुआ।

अर्जुन का शरीर गायब नहीं हुआ।

बल्कि उसके सीने पर बना एक छोटा-सा जन्मचिह्न तेज़ी से चमकने लगा।

आचार्य दिव्यानंद आश्चर्य से बोले—

"यह... कैसे संभव है?"

उन्होंने काँपती आवाज़ में कहा—

"अर्जुन... तुम साधारण मनुष्य नहीं हो..."

और तभी...

हवेली के खंडहरों के नीचे से एक प्राचीन पत्थर का द्वार धीरे-धीरे खुलने लगा।

उसके ऊपर सुनहरे अक्षरों में लिखा था—